THE

ChangeMakers

April to June 2022 Issue 14

Transforming Rural Bihar

गैर-कृषि आजीविका प्रोत्साहन विशेषांक

पारंपरिक कलाओं के विकास से आसान हुई रोजगार की राह

Page 01

Rural Food Processing Units are Leading the Way

Page 12

Ensuring Nutritional Blended Food

Page 14

बड़की दीदी

Page 25

From the editor's desk

Dear Readers,

Greetings and wishing good health.

While Bihar's economic structure is changing, the pattern of employment is also presenting a shift from farm to non-farm sector. The latest Periodic Labour Force Survey (PLFS) (2019- 20) reports around 39 percent of rural workforce engaged in non-farm sector. The sector contributes over 30% of rural income and for the landless and very poor, income gains at the household level are associated with additional wages earned from non-farm activities. However, they face constraints of access to connectivity, relevant skills training, finance and legal rights.

This edition of "The Changemakers" relay the approach and strategies adopted by JEEViKA in augmenting rural non-farm economy in Bihar by venturing into several arrays of the sector like food and beverages, food processing, rural transportation, retail, art and craft. In the process, the program builds capacities on technical and life skills, imparts knowledge and leadership skills needed exclusively to the women to emerge as successful entrepreneurs.

The "Didi ki Kahani, Didi ki Zubani" segment captures the experience of budding women entrepreneurs. Our regular segments on "Man ki Kalam se", "Badki didi" and Events shall continue to entice our readers with interesting and informative messages.

Happy reading

Stay Safe

Regards
Mahua Roy Choudhury
pc.gkm@brlps.in

EDITORIAL TEAM

- **Mrs. Mahua Roy Choudhury**
  Program Coordinator (G&KM)
- **Mr. Pawan Kr. Priyadarshi**
  Project Manager (Communication)

CONTENT COMPILATION TEAM

- **Mr. Biplab Sarkar**
  Manager Communication, SPMU
- **Mr. Rajeev Ranjan**
  Manager Communication, Samastipur

संदेश

श्री राहुल कुमार (भा.प्र.से.)
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)
सह राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान सह आयुक्त मनरेगा

बिहार सरकार के मार्गदर्शन में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण के लिए जीविका द्वारा आजीविका संवर्द्धन के कई कार्यक्रमों का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। आर्थिक सशक्तीकरण के लिए मुख्य रूप से कृषि, गैर कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। आजीविका की इन गतिविधियों में गैर कृषि गतिविधियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। पिछले अनेक वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएं विकसित करने के लिए किए जा रहे प्रभावकारी प्रयासों में गैर कृषि क्षेत्र में किए गए कार्यों के सकारात्मक परिणाम आज हमारे सामने है। दीदी की रसोई, ग्रामीण मार्ट के साथ–साथ दीदियों द्वारा संचालित छोटे–छोटे व्यवसायों, कुटीर उद्योगों, सिक्की, सुजनी, मिथिला पेंटिंग आदि ने लक्षित समुदाय के जीवन में आमूलचुल परिवर्तन लाने का कार्य किया है। जीविका ने अपने प्रारंभ से ही महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का जो सपना देखा था उसके लिए किए गए प्रयासों में गैर कृषि क्षेत्र में किए गए कार्य काफी संतोषजनक रहे हैं। इसके कारण जीविका दीदियां परिवार और समुदायों के आर्थिक कल्याण, गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तीकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार वे सतत् विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। 'चेंज मेकर्स' का यह अंक जीविका द्वारा गैर कृषि क्षेत्र में किए गए कार्यों को हमारे सामने लाने का एक अभिनव प्रयास है। पत्रिका गैर कृषि कार्य को एक नया आयाम देगी ऐसा मुझे विश्वास है। पत्रिका की टीम को बधाईयां।

CONTENTS

पारंपरिक कलाओं के विकास से आसान हुई रोजगार की राह..... 01
Significance of Traditional Art and Craft 04
Grameen Bazaar : The One Stop Solution to meet the Demand & Supply..... 06
Beekeeping Intervention : A Sustaining Livelihood Option..... 10
Rural Food Processing Units are Leading the Way..... 12
Ensuring Nutritional Blended Food..... 14

संदेश

श्री बालामुरूगन डी. (भा.प्र.से.)

सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

हाल के वर्षों में बिहार में हुए ग्रामीण विकास में महिलाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है। कभी घर की चाहरदीवारी तक सीमित रहने वाली ये महिलाएं अब हर प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। साथ ही सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को लक्षित वर्ग तक पहुंचाने तथा इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में वे सराहनीय योगदान दे रही हैं। जीविका समूह के माध्यम से संगठित हुई इन महिलाओं में शिक्षा एवं जागरूकता का व्यापक संचार हुआ है। सजगता एवं संगठन की एकता की बदौलत समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु वे निरंतर प्रयासरत हैं। इसी तरह आर्थिक गतिविधियों के तहत महिलाओं ने अपने दायरे का विस्तार किया है। कृषि एवं पशुपालन संबंधी गतिविधियों में तो उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा ही है, वहीं अब वे गैर–कृषि गतिविधियों तथा ग्रामीण उद्यमिता के क्षेत्र में भी अपना हाथ आजमा रही हैं। समूह से ऋण लेकर महिलाएं छोटे–छोटे व्यवसाय और लघु–कुटीर उद्यम चला रही हैं। इसके अलावा वे मधुबनी पेंटिंग, सिक्की, सुजनी जैसे विभिन्न प्रकार के कला व शिल्प वस्तुओं के निर्माण और मधु उत्पादन के कार्य से जुड़ी हैं। इससे उनके घर की आमदनी बढ़ी है। कोरोना संक्रमण के दौरान बड़े पैमाने पर मास्क का निर्माण और अस्पतालों में दीदी की रसोई का सफलतापूर्वक संचालन जैसे कार्यों से महिलाओं ने वैश्विक पहचान बनाई है। जीविका के तहत की जा रही गैर कृषि गतिविधियों में अब ग्रामीण बाजार, जीविका हाट, स्टार्ट अप ग्राम उद्यमिता, आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना जैसे नये आयाम जुड़े हैं। इन गतिविधियों से जुड़कर बड़ी संख्या में महिलाएं तरक्की की राह पर अग्रसर हैं। महिलाओं की तरक्की से न केवल घर में खुशहाली आई है बल्कि इससे पूरे ग्रामीण परिवेश में भी बदलाव आया है। इन सफलताओं की वजह से महिलाएं अब समाज का पथप्रदर्शक बन रही हैं। 'चेंज मेकर्स' के इस नए अंक में जीविका दीदियों द्वारा की जा रही गैर–कृषि गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के इस नवीन संस्करण के माध्यम से गैर–कृषि गतिविधि से जुड़े नये आयाम को समूह की समस्त दीदियों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। पूरी टीम को मेरी शुभकामनाएं।

CONTENTS

राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक विकास परियोजना (NRETP)..... 16

Food Enterprise..... 19

दीदी की कहानी : दीदी की जुबानी..... 23

बड़की दीदी..... 25

मन की कलम से..... 27

Event..... 28

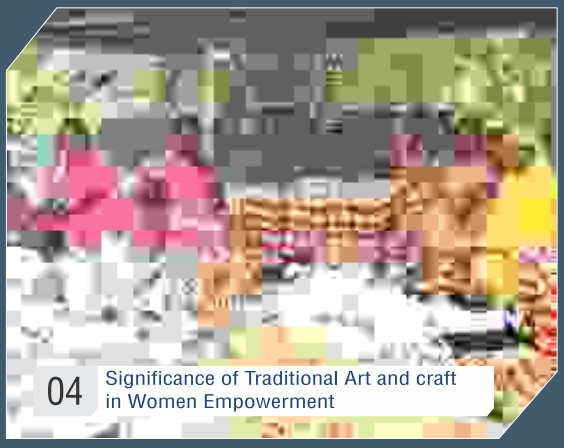

04 Significance of Traditional Art and craft in Women Empowerment

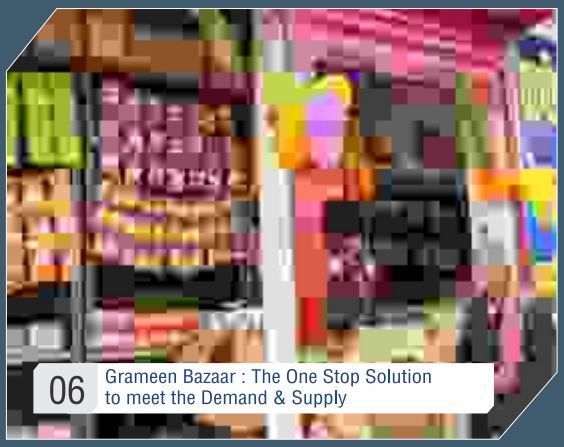

06 Grameen Bazaar : The One Stop Solution to meet the Demand & Supply

10 Beekeeping Intervention A Sustaining Livelihood Option

16 राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक विकास परियोजना

पारंपरिक कलाओं के विकास से आसान हुई रोजगार की राह

विकास कुमार राव, प्रबंधक - संचार, सुपौल

जीविका द्वारा आजीविका की वैकल्पिक सुविधा प्रदान कर कृषि पर ग्रामीण बिहार की निर्भरता को कम करने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए गैर कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने का प्रयास निरंतर जारी है। इसके परिणामस्वरुप जहां जीविका से जुड़े परिवारों को वैकल्पिक रोजगार का साधन उपलब्ध हुआ है, वहीं उनके परिवार के सदस्यों का पलायन भी एक हद तक रूका है। जीविका द्वारा इस दिशा में कई स्तरों पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। स्थानीय स्तरों की जरूरतों, सुविधाओं, आवश्यकताओं एवं बाजार की उपलब्धता को ध्यान में रखकर गैर कृषि गतिविधियों की संभावनाओं पर जीविका द्वारा रणनीति बनाकर कार्य किये जाने के कारण इसके परिणाम काफी सुखद आ रहे हैं। जीविका के प्रयास का ही नतीजा है कि उत्पादक समूहों से जुड़ी दीदियों के बीच ऋण के अधिक प्रवाह, छोटे कुटीर और ग्रामीण उद्योगों, हस्तकरघा, हस्तशिल्प, मधुबनी कला आदि के बेहतरी के लिए विशेष ध्यान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों के बाजार के विकास के साथ ही जीविका दीदियों के बीच उद्यमिता व्यवहार और आवश्यक कौशल निर्माण जीविका के लिए प्राथमिकता का क्षेत्र है। जीविका गैर कृषि कार्यों से संबन्धित क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने एवं संवर्धन करने के लिए भी सक्रिय रुप से कार्य कर रही है।

बिहार प्राचीन काल से ही हस्त एवं शिल्प कला का केन्द्र रहा है। बिहार के कलात्मक सामाग्रियों की मांग राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। जीविका द्वारा गैर कृषि क्षेत्र एवं सूक्ष्म उद्यम के विभिन्न कलाओं से जुड़ी हजारों वैसी महिलाओं की पहचान की गयी, जो इसे आजीविका के साधन के रूप में अपनाना चाह रही थीं। इन महिलाओं के द्वारा उत्पादक समूहों का निर्माण किया गया। उत्पाद समूहों से जुड़ी महिलाओं को तकनीकी दक्षता आदि के लिए प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा जीविका अपने उत्पादक समूहों को व्यापार की योजना निर्माण एवं वित्त पोषण में मदद करने लगी। इसके उपरांत विभिन्न स्तरों पर आयोजित मेले और प्रदर्शनियों में उत्पादों का प्रदर्शन और विपणन का अवसर प्रदान करने से गैर कृषि कार्यों से जुड़ी दीदियों के लिए नया अवसर उपलब्ध होने लगा। इसका लाभ यह हुआ कि उत्पादक समूह से जुड़ी दीदियां आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने लगीं।

गैर कृषि गतिविधियों में जीविका द्वारा विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न स्तरों पर कई प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है। जीविका द्वारा गैर कृषि गतिविधियों के तहत मधुबनी कला, सिक्की, सुजनी, मधुमक्खी पालन, जूट एवं बांस से बने उत्पाद, दीदी की रसोई, ग्रामीण बाजार, स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम, आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना, अपना जीविका हाट, जयपुर रग्स आदि कार्य प्रमुखता के साथ किए जा रहे हैं। इन गतिविधियों से हजारों दीदियां जुड़कर अपने जीवन में बदलाव लाने में सफल हुइ हैं। आज इन गतिविधियों के कारण जीविका दीदियों को अपनी एक नई पहचान मिली है।

मधुबनी कला

कला एवं संस्कृति के अनेक विधाओं से बिहार प्राचीन काल से ही जुड़ा रहा है। इन कलाओं में मधुबनी चित्र 'मधुबनी चित्रकला' के नाम से विश्व विख्यात है। इस प्राचीन कला का जुड़ाव लोक घटनाओं को फूलों से तैयार रंगों से घर की दीवारों पर उकेरना है जो मधुबनी जिले के घरों में देखने को मिल जाती है। इस कला का प्रचार – प्रसार वैश्विक स्तर पर है। यह कला पूरे विश्व में मधुबनी पेंटिग के नाम से विख्यात है। जिसे देखने दूसरे देशों से सैलानियां आते रहते हैं। मधुबनी पेंटिंग मूल रूप से मिथिला या मैथिली पेंटिंग के रूप में जाना जाता है। जीविका ने मधुबनी के शिल्पियों के साथ काम करना शुरू किया और मधुबनी जिले के राजनगर प्रखंड में शिल्प संघ के नाम से उत्पादक समूह का गठन किया गया। उत्पादक समूह की सफलता से दीदियों के लिए नया रास्ता खुल गया है।

सिक्की

सिक्की एक प्रकार की घास है जो कई उत्पादों को बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। बिहार में इस शिल्प को विशेष रूप से महिलाओं के द्वारा बनाया जाता है। आकर्षक खिलौने, हाथी, पक्षी, सांप, फूलदान, गुलदस्ता, आभूषण, शोपीस, घर सजावट सामग्री, कछुआ, देवी, घरेलू उपयोग की वस्तुएं यथा मौनी, दौउड़ी, सुप्ती आदि का उत्पादन सिक्की द्वारा किया जाता है। कई जिलों में जीविका द्वारा सिक्की कला से निर्मित उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा जीविका द्वारा सिक्की उत्पादक समूहों का गठन कर इस कार्य को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन उत्पादक समूहों से जुड़ी दीदियों को विभिन्न तरीकों से प्रशिक्षित किया जाता है और बाजार की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है।

सुजनी

सुजनी कला में अलग–अलग रंगों के कपड़ों को एक साथ मिलाकर जोड़ा जाता है। जिसके बाद इसे डिजाईन में शामिल किया जाता है। नवजात शिशुओं के लिए रजाई, देवी–देवताओं की तस्वीर, तोरण, झालर आदि सुजनी कला के उत्पाद हैं। बाजार के साथ तालमेल करते हुए कलाकारों ने साड़ी पर और अन्य वस्त्रों पर पैटर्न बनाने का काम भी शुरू किया। बिहार के मुजफ्फरपुर जिला में सुजनी का कार्य सफलता पूर्वक किया जा रहा है।

मधुमक्खी पालन

मधुमक्खी पालन की गतिविधियों के लिए बिहार का वातावरण अनुकूल है। इसके अलावे लीची का पर्याप्त उत्पादन भी मधुमक्खी पालन में सहायक है। मधुमक्खी पालन एक मौसमी गतिविधि है जो अतिरिक्त आय में रूचि रखने वाले परिवारों के लिए आमदनी का एक अच्छा स्रोत है। इसके लिए बहुत अधिक जमीन की आवश्कता नहीं होती है। इस गतिविधि को सफलतापूर्वक उत्पादक समूहों में शामिल सदस्यों के माध्यम से बिहार के कई जिलों में किया जा रहा है।

दीदी की रसोई

जीविका दीदियां सामाजिक बदलाव के साथ आर्थिक विकास के अपने ध्येय की ओर निरंतर आगे बढ़ा रही हैं। इसी कम में जीविका दीदियों ने सदर एवं अनुमंडलीय अस्पतालों में मरीजों को शुद्ध एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की पहल की है एवं उद्यम संचालन में कुशलता हासिल कर आर्थिक स्वाबलंबन की दिशा में आगे बढ़ने का कार्य किया है। कुडुम्बश्री के तकनीकी सहयोग से जीविका दीदियों द्वारा कई जिलों के सदर एवं अनुमंडलीय अस्पतालों में दीदी की रसोई की शुरूआत

की गयी है। जीविका द्वारा यह महत्वपूर्ण गतिविधि सफलता पूर्वक संचालित की जा रही है। इस गतिविधि से जहां मरीजों को स्वच्छ, पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन की उपलब्धता सुनिश्चत हुई है, वहीं जीविका दीदियों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है।

जीविका ग्रामीण बाजार (रूरल रिटेल मार्ट)

जीविका ग्रामीण बाजार जीविका के अभिनव प्रयासों में से एक है। यह बाजार बिहार के कई प्रखंडों में सफलता पूर्वक संचालित है। इस प्रकिया में स्थानीय स्तर पर जीविका दीदियों द्वारा संचालित छोटे–छोटे दुकानों को रूरल रिटेल मार्ट से जोड़ा जाता है और आवश्यकतानुसार सामानों की उपलब्धता उचित मूल्य पर सुनिश्चित की जाती है। इस प्रकिया में एक तरफ जीविका दीदियों के आय में बढ़ोत्तरी हुई है, वहीं उन्हें बिचौलियों से भी मुक्ति मिली है। साथ ही साथ रूरल रिटेल मार्ट के संचालन से जुड़ी दीदियों को भी लाभ मिल रहा है।

स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम

जीविका द्वारा उद्यम हेतु उपलब्ध कराए जा रहे विकल्पों में स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम एक योजना है। इस योजना द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के सूक्ष्म उद्यमों को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता के साथ–साथ एक सुव्यवस्थित तंत्र उपलब्ध कराया गया है। जीविका द्वारा स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम गया, वैशाली, मुजफ्फरपुर, पटना, भागलपुर, मधुबनी एवं नालंदा जिला में कुदुम्बश्री के सहयोग से सफलता पूर्वक संचालित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की सफलता से ग्रामीण उद्यमी बिहार की अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन गए हैं।

आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना

नेशनल रूरल लाइवलीहुड मिशन के सहयोग से जीविका द्वारा आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना बिहार के छह जिलों दरभंगा, गया, मुजफ्फरपुर, नालंदा, पटना एवं वैशाली के 17 प्रखंडों में सफलता पूर्वक संचालित है। जीविका के सामुदायिक आधारित संगठनों द्वारा लाभार्थी का चयन कर उसे ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करवाई जाती है। इस कार्यक्रम से जहां स्थानीय स्तर पर यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद मिली है, वहीं जीविका दीदियों के बीच रोजगार के साधन में भी वृद्धि हुई है।

अपना जीविका हाट

अपना जीविका हाट गतिविधि भी जीविका द्वारा छोटे–छोटे उद्यमी एवं व्यवसायी को एक व्यवस्थित तंत्र से जोड़कर उन्हें एक बेहतर बाजार की उपलब्धता सुनिश्चित करने का एक कार्यक्रम है। इस गतिविधि में जीविका के सामुदायिक आधारित संगठनों द्वारा जीविका दीदियों को वित्तीय सहयोग प्रदान किया जाता है। साथ ही बाजार की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए जीविका दीदियों को उत्पादों की बिक्री के लिए एक स्थान पर संयोजित किया जाता है। इस गतिविधि का बेहतर परिणाम देखने को मिल रहा है और जीविका दीदियां की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया है।

कालीन कार्य

जीविका, जयपुर रग्स जैसे सेक्टर एक्सपर्ट संस्थाओं के तकनीकी सहायता से वैसी दीदियां जो कालीन उद्योग में बुनकर के रूप में कार्यरत हैं, उन्हें तकनीकी रूप से दक्ष बनाने का कार्य कर रही हैं। इस प्रकिया में जहां जीविका दीदियों की कार्य संस्कृति को बढ़ावा मिला है, वहीं वह आधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित होकर अपनी कार्यक्षमता को बढ़ा रही हैं। इस गतिविधि से जीविका दीदियों के आर्थिक सशक्तीकरण में सहायता मिली है।

जीविका द्वारा दीदियों के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए आजीविका के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। परंपरागत तरीकों के साथ नवाचारों को भी महत्व दिया गया। इन प्रयासों का नतीजा है कि कृषि, पशुधन के साथ जीविका दीदियां गैर कृषि गतिविधियों में भी अपने सफलता का परचम लहरा रही हैं। आज गैर कृषि गतिविधियों के विभिन्न आयामों के माध्यम से जीविका दीदियों ने बदलाव के नए मानकों को स्थापित किया है।

Significance of Traditional Art and craft in Women Empowerment

Nupur Kamal, Non-Farm

Bihar has a rich culture and heritage. The paintings and embroidery work of Bihar have a global market presence. Handicrafts industry in Bihar serve as a good business option for many poor and landless people. These traditional art forms have a high demand in the market but as the market is highly dynamic, the products need to be updated in terms of designs and quality to exist in the market. This traditional skill set can be improvised to design market oriented products.

BRLPS has collectivized around 3000 artisans into Producer Groups in 17 different art forms across 20 districts of Bihar. Producer Groups(15-50 members in each group) that have been formed and trained address issues of accessing to finance, design training requirements & support in price negotiation. A pool of master trainers have been empaneled to provide different type of trainings to these groups after training need assessment of artisans. As the groups operate on a small scale, they face challenges to propel the artisans to the next level of business activity in terms of scale, quality, product diversity to leverage National and International market.

“Shilpgram Mahila Producer Company Limited” An initiative of Bihar Rural Livelihoods Promotion Society, was incorporated on October 1, 2018, with the sole objective of enhancing the financial sustainability of rural women artisans through marketing, design development, and capacity-building support. Headquartered in Darbhanga, the cultural capital of Bihar, Shilpgram currently incorporates over 500 women artisans shareholders spread across the nearby districts of Darbhanga, Madhubani, and Muzaffarpur. Collectively-owned and run by its women member artisans, Shilpgram is dedicated to the social and financial empowerment of more than 1000 rural artisans across Bihar by promoting their traditional handcrafting skills and connecting urban consumers to the local art forms of Bihar. Products are sold through various channels like:

- B2B - various institutional buyers like Education Department, Govt. of Bihar, Dept. of PR, Govt. of Bihar, Project Concern International, etc.
- Sales through physical shop: Display of products for sale @ Khadi mall, Patna and Retail & wellness mall, Darbhanga
- Craft Fairs - Active participation in local, national and international fairs, such as:-Indian handloom fair, Japan, IITF, Ajeevika Mela, Delhi, different Saras fairs and other fairs & exhibitions.

E-Commerce – Jeevika has initiated its own e-portal (shop.brlps.in) from June 2020 to sell the SHG products online. Products being sold on the website are - Honey, different types of masks, madhubani painted sarees, madhubani painted stoles, cushion cover, madhubani paintings, Sikki items, sikki paintings, Budhha statue, madhubani painted folders, madhubani painted kettles, counting to a total of 104 products. The most sold items are Madhubani painted stoles and Jeevika honey.

Jeevika supports Shilpgram by partnering with

1. GeoTechnosoft for development of E-Commerce portal
2. BFA Global for supporting E-Commerce platform
3. Delhivery as delivery partner for E-Commerce portal across India.

Financial Summary of Shilpgram Producer Company:

Head		Amount(in Cr.)
Funding Support from JEEViKA		1.14
One Time Investment	Infrastructure	0.03
	HR	0.14
Recurring Investment	Production and Raw Material	0.97
Business done by the company	FY 2019-20	0.24
	FY 2020-21	3.78
	FY 2021-22 (April to September 21)	1.62
	Closing Stock	0.28
Total Turnover		**5.92**
Total % increase in revenue (from recurring investment)		493%

Supported by master craftswomen practicing traditional art forms for generations, Shilpgram is currently one of India's leading producers of handcrafted Madhubani, Sujni, Bawan Buti apparel, Sikki crafts, and stone sculptures. The members also excel in activities such as stitching and tailoring, along with engaging in the production of high-quality Bhagalpuri silk and organic foods such as honey and sattu. Empowered by the talent, determination of the artisans, Shilpgram strives to promote and showcase Bihar's rich culture, traditions, and art forms to people across the globe.

Grameen Bazaar : The One Stop Solution to meet the Demand & Supply

Sangeet Kumar, PM-BD (NF), Rajesh Kumar Singh, Director, ISPL, Anurag Kumar

Background

Several Self Help Groups members earn their livelihood by running grocery stores in rural areas. JEEViKA Didis, who run such grocery stores, often do not make much profit due to retail purchases and non-availability of quality products.

The idea of initiation of Grameen bazaar was conceptualised following conducted an enterprise survey in 2017. The survey collected data from 4-5 enterprises from every 534 blocks in Bihar across 4455 samples and 72 enterprises. The survey concluded that 10% of the enterprise in Bihar are Kirana retail stores (Grocery Shops) and are majorly operated by women entrepreneurs. An opportunity for reducing poverty through skill development and gainful self-employment was seen by developing a dedicated rural retail channel.

A platform was envisaged to support JEEViKA Didi's livelihood, which would create a representation of up to 100 grocery stores and enter into direct agreements with companies in the market to make good quality products available to their shopkeeper members by purchasing them at reasonable margins. This collective of JEEViKA Didi who run grocery stores has been named as the Grameen Bazaar.

Objective

Grameen Bazaar is a nurtured and sponsored project under the joint aegis of World Bank, National Rural Livelihood

Mission and Government of Bihar with the following objectives:

1. To do business at better profits in the market by organising women grocery stores owners
2. Ensuring availability of quality products at rural level
3. Provide a market for quality products produced by JEEViKA groups

Features

Grameen Bazaar is an AOP of community business organizations of SHG members running grocery stores with equity stake. It operates as a wholesale market. A HUB that supports CBOs to improve its services and business model to meet the expectations of rural consumers seeking daily products around which there is an ECO-SYSTEM of "resources" (physical resources, human resources, financial resources and intellectual resources).

Business Model-

Grameen Bazaar is a demand and supply aggregator of up to 100 rural Kirana store owner-members. It collects orders from member Kirana stores and based on that demand aggregation it purchases product from suppliers on better margins which are equivalent to a distributor. It caters to any institutional sales opportunity such as supplier to Village Organizations who procure graines and oil under Food Security Fund, supplies to Didi Ki Rasoi, Training & Learning Centres, Food Fortification Units etc.

It operates as:

1. Business To Business (B2B) Distribution Centre
2. Works for supporting income enhancement of member Kirana stores besides keeping made profits for its own sustainability

Grameen Bazaar acts as a linkage in the FMCG and Commodity supply chain from manufacturer to customer.

Target Consumer

1. Owner-Member Kirana Stores
2. Institutional sale through community-based institutions such as Food Security Fund, Didi Ki Rasoi, Training & Learning Centre, Food Fortification Unit and Village Organisations for supplies under FSF.

Outreach

Currently 112 Grameen bazaar are operational in 112 Blocks across 24 Districts, Serving over 5864 Kirana stores

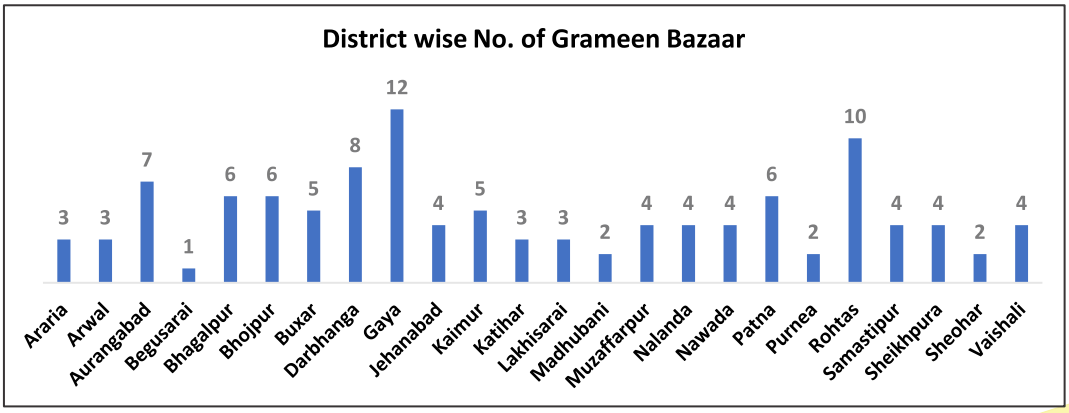

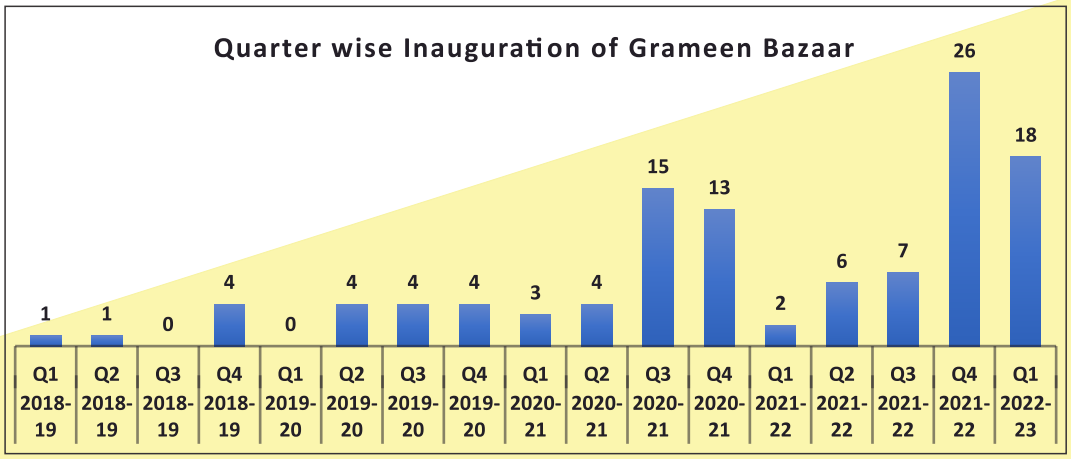

Technology Interface

All Grameen Bazaar use same technology for daily operations known as Centralized Performance Monitoring System (CPMS). CPMS is an ERP solution for Grameen Bazaar which provides real time operations and monitoring of Grameen Bazaar on inventory management, Sales, Retail Management, Inward & Outward Supply chain management and Books of record. CPMS has following key feature:

- Announcements- To upload important documents and training videos
- Dashboard- Interactively monitor key performance indicators and transactional data
- Employee Attendance- To capture Grameen Bazaar employee's daily attendance
- Digital Survey-To Survey the Kirana owner-members for their demands
- Market interface- Supplier access for broadcasting of monthly rates and schemes
- Web application for aggregation of demand from member Kirana stores
- Real time monitoring and can be tracked from block, district or state nodes

Customer Relationship Management

In order to put our ears to the end beneficiaries (Kirana shop owners) in the Grameen Bazaar program and include her say in the program delivery, it was decided to integrate services of JEEViKA Help Desk/Call Centre into the program.

Help Desk Services/Call Centre helps reaching out to the three key stakeholders of the program namely, Grameen Bazaar members (Kirana owners), OB members and store staff. While on one side, it helps to record the expectations and gaps in existing delivery mechanisms, on the other hand, closer and frequent engagement will have a positive impact on the ownership and accountability towards the program.

Market Tie-ups

S.NO	Supplier's Name	Product Company	District
1	Kalawati Enterprises Pvt Ltd.	P&G- Ariel, Tide, Head & Shoulder, Pantene, Whisper, Pamper, Vicks, Gillette Products Oral-B etc.	Pan Bihar
2	Ramjee Print Shops	Copy, Pencil, Eraser, Scale, Sharpener, Writing Board, Pencil Pouch, Geometry Box, Cover Roll, Button Folder File, Crayons, Pocket Diary	Pan Bihar
3	Nilon's	Pickles, Masala, Ready to cook, Instant Mix, Juice, jam, Papad, vermicelli, soyabadi, cereals	Pan Bihar
4	Kakan Rice Mill	Mansuri Sella Rice	Pan Bihar
5	Shahbad Agro Pvt Ltd	Sella/Katarni (BPT), Sella/Steam Rice	Pan Bihar
6	Shri krishna Steam Rice & Oil Mill	Katarni, Sonam, Mansuri	Pan Bihar
7	Patanjali	Patanjali-Non-Food	Pan Bihar
8	SDPL	SDPL (Scrub Pad, Detergent Powder, Detergent Cake, Handwash, etc.,)	Pan Bihar

Major Partners

- ISPL
- Capacity building of all stakeholders on Retail chain management and supplier onboarding.
- ILRT (BASIX)
- Capacity building of member Kirana stores
- GEOTECHNOSOFT
- Technology platform for Retail chain management

Impact

1. Availability of Quality products at rural level at better margin.
2. Kirana Members are getting total retailer margin and thus have improved their income.
3. Satat Jeevikoparjan yojana, Food Security Fund, Didi Ki Rasoi, Training & Learning Centre are now having a proper channel for institutional purchase.
4. Local employment opportunities have been created by Grameen Bazaar.
5. Provided a market platform for micro entrepreneurs under Start-up Village Entrepreneurship Programme (SVEP) and National Rural Economic Transformation Project (NRETP).

Major Challenges

1. Competing with traditional business practices.
2. Purchasing products including GST at local level and maintaining competitive pricing.

BEEKEEPING INTERVENTION
A Sustaining Livelihood Option

Samir Kumar, PM-NF, Surdeep Kumar Samdarshi, Manager-NF

Jeevika is working closely with the rural people on various farm & non-farm based livelihood generation activities - for socio-economic and nutritional security. Poor households linked to Self Help Groups (SHGs) are involved in beekeeping for the last many years. Such households are mainly located in Muzaffarpur, Khagaria, East Champaran, West Champaran, Vaishali, Samastipur and Bhagalpur districts which is a hub of beekeeping. In a survey conducted by JEEViKA, it was found that there are more than 5000 households of SHGs members in different blocks who are earning a part of their income through this activity. This altruistic initiative in bee-keeping to earn better returns through a community run enterprises model focused on quality production and efficient market linkages.

The basic infrastructure for promoting Bee-Keeping intervention:

- Producer Groups comprising of 15-25 SHG are promoted. (Jeevika has established total 199 PGs in 22 districts of Bihar with a total production of 432 MT of honey in the past season.)
- Provide Training & Capacity building/ Orientation/ Technical skills of PG members on different activities involved in production of honey so that it is expected to reduce risk of

production and improve operational efficiency and productivity.

- Bee-boxes/hives distribution to the trained members of PGs by State Horticulture Mission (SHM) for honey production.

Using this network, with the help or coordination with State Horticulture Mission (SHM), Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (BRLPS) successfully distributed more than 36000 bee-boxes to the PG members of total 22 districts till date. Also, the Bee-Keeping intervention of Jeevika have successfully created a cadre of skilled well-trained professionals at all levels of operations. Further, it has been successful in training and upgrading the skills of members (especially Bee-keepers) who now consider Bee-Keeping as a potential livelihood option.

Further, Jeevika has posted a team of professionals like Master Resource Persons and agriculture professionals at the district headquarters and one Livelihood Specialist (LHS) at the block level. It has also invested extensively on the training and capacity building of the youth of target villages. Educated youths of these villages were trained as Village Resource Persons (VRPS) or semi-skilled professionals who could advice the Bee-Keeping members on various aspects of apiculture and if need arises, could administer migration of bee boxes/hives within state or outside the state. This intervention not only created a strong cadre of trained professionals' right from the state level up to the village level but also reduced the Bee-keepers' cost for availing these services.

In 2021, JEEViKA Promoted Madhugram Mahila Producer Company Ltd. headquartered in Hajipur, Vaishali with an objective to engage in further value addition activities and to establish a brand of their own. This will go a long way in enhancing the livelihood of thousands of rural women. The Producer Company is working as an organized enterprise to provide the producers with an opportunity to have a better control on quality of produce and hence better bargaining power of their produce. Also value addition of honey produced would help earn better profit margin.

Rural Food Processing Units are Leading the Way

Prime Minister Formalisation of Micro food processing Enterprises (PMFME)

Nupur Ojha, YP-NF

Ministry of Food Processing Industry (MoFPI) has launched Prime Minister Formalisation of Micro food processing Enterprises (PM FME) scheme under the Aatmanirbhar Bharat Abhiyan with the aim to enhance the competitiveness of existing individual micro-enterprises in the unorganized segment of the food processing industry and promote formalization of the sector. The scheme has a special focus on supporting Self-Groups/SHG members engaged in food processing enterprise along their entire value chain.

Support from the PMFME scheme

i. Seed capital @ Rs. 40,000/- per SHG member for working capital and purchase of small tools
ii. Food processing entrepreneurs through credit-linked capital with a 35% subsidy of the eligible project cost up

to a ceiling of Rs.10 lakh per unit

iii. Credit linked grant of 35% for capital investment to FPOs/ SHGs/ producer cooperatives.

iv. Support for marketing & branding to micro units

State Nodal Agencies (SNAs) under PMFME scheme are responsible for implementation of the scheme at the state level. In Bihar, Industry Dept. has been working as a State Nodal Agency (SNA) for PMFME scheme. The PMFME scheme envisages financial support of upto Rs. 40,000 for working capital and purchase of small tools for each member of SHGs engaged in food processing activities. MoFPI releases the funds to SNAs for the Seed Money component, as a grant, to SNAs. The SNAs in turn release funds to SRLMs. For channelising the fund to SHGs, the seed money is being provided to CBOs (Cluster Level Federation/ Village Organizations) by JEEViKA as a grant and in turn provided to the SHG members as a loan. The grant to CBOs will act as a corpus.

Till date, more than two thousand entries has been approved on the NRLM MIS across all 38 districts of Bihar and funds for 1127 enterprises has been received i.e 3.79 Cr. and disbursed to the CBOs in JEEViKA.

District	Total Number of Enterprises
ARARIA	31
ARWAL	14
AURANAGABAD	106
BANKA	57
BEGUSARAI	36
BHAGALPUR	28
BHOJPUR	32
BUXAR	23
DARBHANGA	97
GAYA	49
GOPALGANJ	31
JAMUI	12
JEHANABAD	48
KAIMUR alias BHABUA	322
KATIHAR	27
LAKHISARAI	37
MADHUBANI	61
MUNGER	2
MUZAFFARPUR	69
PASHCHIM CHAMPARAN	5
PATNA	4
PURBI CHAMPARAN	4
PURNIA	2
SAHARSA	1
SAMASTIPUR	17
SHEIKHPURA	5
SHEOHAR	1
VAISHALI	6
Grand Total	**1127**

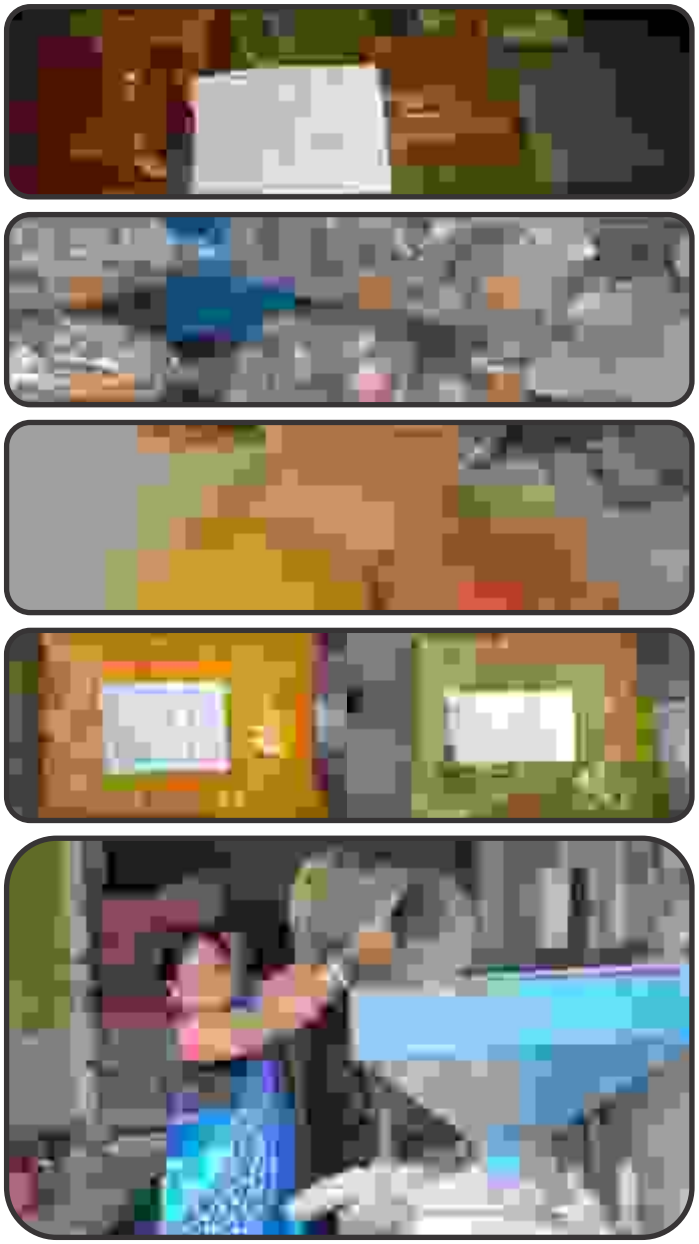

Ensuring Nutritional Blended Food through Food Fortification Units in Bihar

Sangeet Kumar, PM-BD (NF), Nupur Ojha, YP-NF

JEEViKA in partnership with The Global Alliance for Improved Nutrition (GAIN) and Nidan (a national level NGO) facilitated the establishment of small quasi-industrial scale plants for the production of nutrition based products in 3 Districts of Bihar i.e Gaya, Khagaria & Muzaffarpur at five different locations. These plants are owned & operated by JEEViKA promoted community-based organization. A total of 90 members are engaged across 5 districts in the operation of plants which acts as a source of livelihood for these SHG women. These Food fortification units are engaged in the production of nutritional blended food, Wheatamix.

These plants produce two versions of the product: a basic version for women and a second version with some added sugar designed to be used by children.

Food Fortification Units: Operations at a Glance

District	Block	Plant Type	Production Capacity (MT)	CBOs name (Ownership of plant)	SHG members employed	Other employees
Khargaria	Sadar (Sansarpur)	Extruder	30	Jeevan Jyoti Jeevika Mahila Gram Sangathan	7	3
Khargaria	Sadar (Simra)	Roaster	20	Chandani Jeevika Mahila Gram Sangathan	7	3
Muzaffarpur	Bochaha	Roaster	20	Deep Mala Jeevika Mahila sankul stariye Sangh	21	3
Muzaffarpur	Musahari	Roaster	20	Sangam Jeevika Mahila sankul stariye sangh	7	1
Gaya	Bodh Gaya	Extruder	30	Roushan Jeevika Mahila Gram Sangathan	19	4

"Wheatamix," a fortified blended flour food supplement

Wheatamix is a blend of flours made from rice, wheat and lentils fortified with micronutrients including vitamins A, C, B12 and the minerals calcium and iron. It is made either by roasting or extruding the ingredients, then milling them, adding a mineral/vitamin premix and blending the final product before packaging in a pouch. The final product is supplied as a coarse powder and designed to be added to water or milk and cooked into porridge.

· Nutritional Information of the product:

Information per 100gm	
Energy	400.06
Crude fat (%)	3.9
Crude fiber (%)	1.45
Protein	13.7
Moister	2.98
Vit A	282.18
Vit B1	0.33
Vit B2	0.41
Vit B3	1.98
Folic acid	20.08
Vit C	24.18
Calcium	202.53
Iron	11.54

Usage of Wheatamix

Wheatamix can be used in several ways, like Raab (Thin porridge), Dalia (Thick porridge), Porridge with fried vegetables, Halwa, Laddoo, Burfi, Mathri.

Existing Jeevika production of Wheatamix

The base ingredients are procured from local markets with importance given to the quality of grain and pulses. The mineral/vitamin premix powder is sourced from an FSSAI (Food Safety and Standards Authority of India) certified manufacturer in New Delhi. The final product is manufactured using one of two different processes: "roasting," where the grains and pulses are roasted, then milled and blended with the mineral vitamin pre-mix before being packed in plastic pouches and sealed, or "extruding," where the base ingredients are roughly milled before being passed through an extruder unit consisting of a tight screw in a metal cylinder. The extruder screw revolves and forces the ingredients through a tiny aperture at the end of the cylinder, instantly cooking them via a combination of pressure, friction, shear forces and superheated steam. The resultant extruded product is then milled and blended with the premix before being packed in plastic pouches and sealed. Nutritionally and organoleptically the two processes produce similar products.

The plants producing Wheatamix have got FSSAI certification and production is being done on the basis of standard norms of FSSAI. Also, monthly lab tests of the product are carried out to ensure proper nutrition & optimal safety.

Convergence of JEEViKA & ICDS for Wheatamix

The Integrated Child Development Services (ICDS) provides supplementary nutrition for children in the age group of six months to three years and to lactating mothers in the form of Take-Home-Ration (THR). The ready to eat product Wheatamix is being provided to ICDS (Aanganwadi centers) which is given as a take-home ration to the beneficiaries of Anganwadi centers located in Bodhgaya Block. As distribution of Wheatamix in Bodhgaya block has been a success, it is now decided by JEEViKA & ICDS to scale up the production and its distribution in other blocks where plants are functional. In these blocks of Khagaria & Muzaffarpur Wheatamix will be supplied as a THR. Also, one more block Dhobi has been extended neighboring Bodhgaya for the supply, where Bodhgaya Plant will cater to 157 AWCs in Dobhi along with AWCs in Bodhgaya in a month. Along with Wheatamix, other nutrition rich products may be produced by plants like poshtik laddu, sattu laddu etc as per specifications of ICDS.

राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक विकास परियोजना (NRETP)

संगीत कुमार, PM-BD (NF), गौरव कपूर, IIM-CIP, अश्रुता सिंह, प्रबंधक –गैर कृषि

क. परिचय

राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक विकास परियोजना (एनआरईटीपी/NRETP) की परिकल्पना ग्रामीण स्तर पर विकासशील उद्योगों को सहयोग प्रदान कर, उन्हें विकसित बनाने के लिए प्रोत्साहित करने की दृष्टि से की गयी है।

ख. अंग

1. वन स्टॉप फैसिलिटी सेंटर (ओएसएफ/OSF)– उप–जिला स्तर पर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े विकासशील उद्योगों को चयनित प्रखंडों में सहयोग देने के लिए वन स्टॉप सुविधा केंद्र की स्थापना की गयी है।
2. क्लस्टर– बिहार में बड़े क्लस्टर उद्योगों को अद्योगामी और अग्रगामी श्रृंखला से जोड़ना, बाज़ार में प्रचलित एवं मांग के हिसाब से वस्तुओं का उत्पादन करना और बड़े बाजारों तक पहुच बनाने में सहायता प्रदान करना।
3. इनक्यूबेशन – जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े प्रगतिशील ग्रामीण उद्योगों को विकसित करना।

ग. लक्षित सदस्य/उद्योग

1. ओएसएफ/OSF– 6000 उद्योगों को 12 जिलों एवं 40 प्रखंडों में मापदंडों के आधार पर चयनित कर उसके व्यापारिक विकास /मुनाफे में वृद्धि हेतु सहयोग करना।
2. क्लस्टर– मधुबनी और दरभंगा के हस्तशिल्प क्लस्टर (मिथिला पेंटिंग और सिक्की) के 650+ शिल्पकारों को नवसृजित करना।
3. इनक्यूबेशन– पूरे बिहार में 150 बड़े उद्योगों को प्रतियोगिता के माध्यम से चुनकर उन्हें वित्तीय एवं अन्य सहयोग प्रदान करते हुए विकसित व्यवसाय बनाना।

घ. मानव संसाधन

NRETP परियोजना को ज़मीनी स्तर पर कारगर करने के लिए निम्न मानव संसाधन की परिकल्पना की गयी है: –

1. NRETP कैडर– 6–7 प्रति प्रखंड।
2. समुदायिक संगठन (CLF/VO/SHG) स्तर पर– ओएसएफ प्रबंधन समिति।
3. जीविका प्रखंड टीम (BPIU)– प्रखंड परियोजना प्रबंधक, ब्लॉक तकनीकी समन्वयक–उद्योग संवर्धन (BTC&EP) और प्रखंड मार्गदर्शक (Mentor)।
4. जीविका जिला टीम (DPCU)– जिला परियोजना प्रबंधक, जिला तकनीकी विशेषज्ञ– उद्योग संवर्धन (DTE&EP) और विशेषज्ञ (Functional Expert)।
5. जीविका राज्य टीम (SPMU)– राज्य परियोजना

प्रबंधक–नॉन फार्म, परियोजना प्रबंधक–व्यापर विकास, प्रबंधक–नॉन फार्म (एनआरईटीपी/NRETP)।

ङ. ओएसएफ (OSF) के घटक

उद्योग श्रेणी	व्यक्तिगत उद्योगों के लिए न्यूनतम वार्षिक आय	समूह उद्योगों के लिए न्यूनतम वार्षिक आय
ट्रेडिंग	6 लाख रूपये	8 लाख रूपये
उत्पादन	4 लाख रूपये	6 लाख रूपये
सेवा	3 लाख रूपये	5 लाख रूपये

1. उद्योगों के चयन के लिए कारोबार की सीमा का मानदंड :–

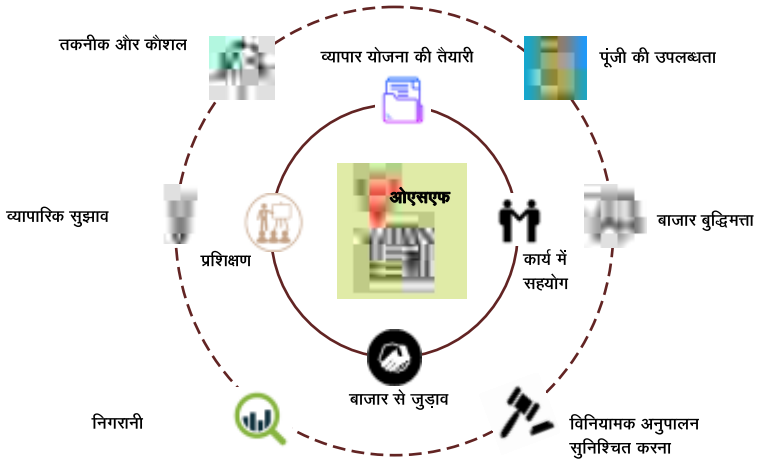

2. ओएसएफ (OSF) सेवाएं।
3. समर्थित उद्योगों के प्रकार और संख्या।

क. स.	उद्योग प्रकार	व्यक्तिगत उद्योग	सामूहिक उद्योग
1	कम से कम 12 महीने पुराने उद्यम	122	13
2	नए उद्यम	13	2
	कुल (150)	**135**	**15**

4. वर्जित उद्योग

निम्नलिखित उद्योग ओएसएफ द्वारा समर्थित नहीं होंगे :

क. कृषि प्राथमिक उत्पादन गतिविधियाँ।

ख. घर के बाड़ी / पिछवाड़े की गतिविधियाँ (जैसे मुर्गी पालन, बुनाई की पूर्व तैयारी की गतिविधियाँ जैसे वारपिंग, बोबिन वाइंडिंग आदि)।

ग. परियोजना कर्मचारियों द्वारा संचालित उद्योग।

5. ओएसएफ के अंतर्गत ऋण सहायता का प्रावधान

उद्योग श्रेणी	CEF से अधिकतम वित्तीय सहायता	उद्यमी द्वारा अंशदान (न्यूनतम)	ऋण स्थगन (Moratorium period)	पुनर्भुगतान की अवधि (Repayment period)	ब्याज दर
व्यक्तिगत उद्यम	2.5 लाख रूपये	10%	6 महीने	12–48 महीने	1% प्रति माह घटित राशि पर (12 % प्रति वर्ष)
सामूहिक उद्यम	5 लाख रूपये	10%	6 महीने	12–48 महीने	1 % प्रति माह घटित राशि पर (12 % प्रति वर्ष)

6. कैडर प्रशिक्षण के लिए सहयोगी संस्था– कुदुम्बश्री (एनआरओ), केरल।

च. क्लस्टर घटक

1. क्लस्टर का नाम – हस्तशिल्प क्लस्टर।
2. शिल्पकार – 650+ कारीगर।
3. क्षेत्र– दरभंगा और मधुबनी।

4. शिल्प– मिथिला पेंटिंग और सिक्की।
5. सहयोग क्षेत्र– नए उत्पाद विकास, बाजार तक पहुँच एवं अनुबंध, बिक्री, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण।
6. सहायक संस्था– फाउंडेशन फॉर MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) क्लस्टर्स।

छ. ऊष्मायन (Incubation) घटक

1. उद्योगों के चयन के लिए प्रतिस्पर्धा का आयोजन।
2. उद्योगों के प्रकार – विनिर्माण/उत्पादन और सेवाएं।
3. टर्नओवर (Turnover) रेंज– तीन प्रकार के उद्योगों को इनक्यूबेटर द्वारा समर्थित किया जा सकता है:–

क.स.	उद्योग का प्रकार	न्यूनतम वार्षिक कारोबार (पिछले 2 वर्ष)	GST रजिस्ट्रेशन अनिवार्य
1	बड़े उद्यम	20 लाख रूपये	हाँ
2	समूह उद्यम	15 लाख रूपये	नहीं
3	व्यक्तिगत उद्यम	12 लाख रूपये	नहीं

4. इनक्यूबेटर सहायता के लिए वर्जित उद्यम

उद्योगों की एक सूची (सांकेतिक) निम्नलिखित है, जो एनआरईटीपी (NRETP) के तहत इनक्यूबेटर द्वारा समर्थित नहीं होगी:–

क. कृषि और प्राथमिक उत्पादन / एकत्रीकरण गतिविधियाँ।
ख. पिछवाड़े की गतिविधियाँ (मुर्गी पालन, बुनाई की पूर्व तैयारी गतिविधियाँ जैसे वारपिंग (Warping), बोबिन वाइंडिंग (Bobin winding) आदि)।
ग. व्यापार / खुदरा (Retail) उद्यम।
घ. वैसे उद्योग जो न्यूनतम स्वास्थ्य और सुरक्षा मानकों का अनुपालन नहीं करते हैं।
ङ. वैसे उद्योग जो पर्यावरण सुरक्षा उपायों का अनुपालन नहीं करते हैं।
च. परियोजना कर्मचारियों द्वारा संचालित उद्यम।

5. सहयोग क्षेत्र– कौशल प्रशिक्षण, विकास योजना तैयार करना, गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली, नियामक अनुपालन, बाजार तक पहुँच एवं अनुबंध, नवाचार/ नवीनीकरण और आधुनिक तकनीक अपनाना।

6. चैलेंज फंड– चैलेंज फंड सामाजिक रूप से सार्थक परियोजनाओं के जोखिमों को कम करने के लिए और उन्हें आर्थिक रूप से लंबे समय के लिए प्रगतिशील रखने का एक अभिनव वित्तपोषण तंत्र है। इसके तहत उद्यमों को वित्तीय सहायता आवंटित करने के लिए पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया अपनायी जाती है।

चैलेंज फण्ड के प्रकार:–

क) अनुदान

उद्योग प्रकार	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार	विजेता उद्यमों की संख्या
बड़े उद्योग	15 लाख रूपये	10 लाख रूपये	5 लाख रूपये	6
सामूहिक उद्योग	7.5 लाख रूपये	3.75 लाख रूपये	1.25 लाख रूपये	6
व्यक्तिगत उद्योग	6 लाख रूपये	3 लाख रूपये	1 लाख रूपये	6

ख) सॉफ्ट लोन (0% ब्याज दर पर)

उद्योग प्रकार	अधिकतम ऋण राशि देय	विजेता उद्यमों की संख्या
सामूहिक उद्योग	5 लाख रूपये	66

7. सहायक संस्था– भारतीय प्रबंधन संस्थान – कलकत्ता इनोवेशन पार्क।

Food Enterprises : A Way for Women's Economic Empowerment

Visit Bihar to experience the personification of Annapurna (the goddess of food) through rural women entrepreneurs of Didi ki Rasoi (DKR)! This chain of community-based canteens is efficiently managed by the empowered rural women who also happen to be the members of the self-help groups (SHGs) of JEEViKA (or Bihar State Rural Livelihoods Mission). DKRs has emerged as the true axiom of collective leadership aiming at meaningful changes in the rural community in terms of poverty elimination in Bihar. These entrepreneurs are charged with commitment to serve the customers (mostly patients of district hospitals) with hygienic and home-like quality food at fair rates. This is an innovation wherein no one is the master and every one is the owner (partner). These unique canteens have been serving the patients of the concerned district hospitals with consistent dedication; the dedication which did not experience a cessation even during COVID-19 pandemic

The process:

The story of change began with a systematic process that included mobilisation and interview of the selected SHG members, their professional training, location selection and hiring of a consultant for on-job training and hand holding support. The potential entrepreneurs were screened through a careful and rigorous process of selection comprising

various conditions. Some of these included-necessity of the candidate being a member of the SHG, possession of prescribed level of literacy, her willingness to invest the seed money, willingness for mobility to attend training/exposure programmes and also her household being situated in the radius of five KMs from the DKR. JEEViKA provides an indicative amount of INR 24 lakhs as canteen set-up amount for a big sized DKR (having a footfall of 350-400 persons every day) on the basis of the business plan submitted by the concerned community based organisation (CBO). This is given as one-time grant. The amount is smaller for smaller canteens.

Creation of the brand:

As a part of brand creation, the logo of DKR was also designed considering various factors. Image of a kalchhi is at the centre to tell about a service related to food. Kalchhi is used in almost all the households of India for cooking and frying purposes. Use of the name of DKR in the logo is an attempt to introduce it while that of JEEViKA tries to establish credibility associated with it. The careful detailing in the brand creation reflects creativity. The dot of the letter 'i' in the word 'didi' reminds of the bindis used by married women of Bihar on their forehead. This is again an effort to connect to the home-like feeling.

Success of the pilot DKR at Vaishali paved way for similar interventions in other districts like Sheikhpura, Purnea, Buxar , Sheohar, Saharsa and Gaya. Within a very short span of 2 years, sev DKRs have become operational in the district hospital of the concerned districts.

DKR has not only given a consistent means of income to the didis, it has also generated employment opportunities for many other employees and other workers who work in these canteens.The salaries are directly transferred to respective bank accounts. The arrangement reflects a hassle-free mechanism as well as financial inclusion of these enterprises. There are also vendors associated with the DKRs who provide goods and services and support in their smooth functioning. Currently , there are 140 service providers and vendors who are members of SHGs. Thus, the DKRs have become a source of direct and indirect employment to a good number of people.

The Market:

Apart from catering to the in-patients of District Hospitals and their attendants; the DKRs have also been making their present felt in fairs and exhibitions at district, state and national levels through food courts. These food courts receive overwhelming responses of the visitors who relish didis' desi (indigenous) as well as transnational delicacies like pizzas, burgers and noodles in a very different locale. Apart from the range of diversified cuisines, the innovation and the reasonable rates also attract the customers of food courts. With a consent from SHS, the DKRs are expanding their clientele which now includes Agriculture Department, Blood Bank, District Collectorate, District JEEViKA offices and several other government bodies. DKR Buxar and Vaishali are proud of serving food to Bihar State Election Commission during General Elections, 2019. Total sales during the General Elections 2019 was worth INR 18 lakhs. The expansion of clientele will be helpful in optimising its financial viability and social acceptance.

Efforts recognized at national level:

3rd prize for its food court at national level Aajeevika Mela, Delhi. Didi ki Rasoi participated in national level SARAS Aajeevika Mela, New Delhi organised by Ministry of Rural Development, Government of India in October 2019 and earned worth INR 6.50 lakhs from sales of food items.

The group was also awarded 3rd position in the category of Ajeevika Saras food court. People of Delhi had a different experience of life with Litti-chokha, Daal-Pitha, Malpua, Thekua, Gujhiya and many other native delicacies of Bihar prepared by these didis . The dexterous display of their culinary and presentation skills in the Mela premises was the centre of attraction.

Hurdles and Challenges:

Going ahead with a work like running and managing a canteen was full of challenges because it was a concept completely based on women work-force. Running the canteen inside the hospital premises throughout the year at prescribed menu and with small margins of profit was another challenge. There were biases at community level and the family members had their own reservations. The customers had prejudices even after the establishment of the canteens, But didis' dedicated services mitigated all the myths and negativities, they accepted all the challenges and removed all the hurdles of their path. Their financial support to the families has sorted out difficulties at family level. The family members have now adjusted themselves to didis' working hours and also share their household chores.Various training programmes, exposures and regular work at the canteen have enhanced didis' competence immensely and they excel on household as well as professional fronts. Today, Didi Ki Rasoi is a successful and well-known enterprise across the state.

Passing the acid test in difficult times of COVID-19:

Consistency of services and dedication of DKRs were noticed in the difficult times of COVID-19 pandemic and the subsequent lockdown. In-patients of the district hospitals and their attendants were dependent on these canteens for food. On the other hand, the didis were facing conveyance problems as well as fear of infection and several restrictions by members of the family. But nothing could stop them; they learnt to reach the canteens on foot and provided incessant services amidst all the difficulties. Usefulness of the condition of the potential candidates being a resident

from the vicinity of 5 KMs can be realised now. Didis' social responsibility in the pandemic also included supply of food to inmates of quarantine centres situated near district hospitals. “The task of supplying food to the inmates of quarantine centre was preceded by a meticulous planning”, says Preeti Singh, Block Project Manager, Buxar Sadar block of JEEViKA. She informs that the didis who were responsible at functional level were trained on the preventive measures like handwashing, social distancing and use of mask. Supply of the food then began as per the menu provided by hospital administration. They served food to more than 12,000 quarantined persons and generated a business volume of more than 30 Lakh rupees. The activity of sensitising the inmates on COVID-19 was also taken up with the help of thematic leaflets.

DKR didis also came forward to supply food to Corona positive patients admitted in special wards of district hospitals. Food is supplied with utmost care using PPE kits, sanitiser, masks and social distancing. The menu for these patients is special. This includes additional items like milk with turmeric, Kaadha , luke warm lemon-water, curd, fruits, eggs and many more items for boosting patients' immunity and enabling their speedy recovery. Additional work load due to this additional service could not affect these women and all of them volunteered to work in both shifts . This is how; they are managing the issue of limited human resources amidst additional workload.

Results and outcomes:

The enterprise has made these rural women financially independent. A news story of Doordarshan National aired on July 14, 2020 termed this effort as 'Aatmanirbharta ki misaal' meaning an example of self-reliance. A consistent means of employment has provided the didis with financial relief and reduced their hardship to a great extent. This tangible result will help these rural women to come out of the vicious cycle of poverty in the days to come. Several other persons like employees and vendors have also got direct or indirect employment in these canteens.The average number of patients (and their attendants) served by these didis presents another positive result. Figures of sales and profit earned are axioms of its potential. But the series of positive outcomes does not end only with tangible or quantitative achievements. There are many more intangible and qualitative results that are difficult to measure but experiences of the successful entrepreneurs and a few words from them establish such outcomes.

As narrated by them, they are now recognised everywhere because of DKR. Realization of one's worth and recognition of one's identity have enhanced their self-confidence. Satisfaction of serving the needy further boosts their morale. Enhanced respect and recognition are very well-evident right from their families wherein they have a better say in the decision-making. With a consistent income, their is a gradual improvement in quality of life. They feel relieved to contribute financially in the family. This contribution helps them to share responsibility of their husbands and thus, become true partners of life. They are now happier mothers whose children are studying well. Didis want many more women to come ahead and follow the path of empowerment shown by them. “We believe there will be many more good results of our efforts in future”, says, Sanju Devi of DKR-Buxar.

दीदी की कहानी दीदी की जुबानी

केस–1 मधुमक्खी पालन

समाज में मिठास घोलने का कार्य कर रहा है डोली का परिवार

पूर्णियाँ जिले के रुपौली प्रखंड के टीकापट्टी गाँव की डोली कुमारी का परिवार मधुमक्खी पालन के लिए अपने क्षेत्र में जाना जाता है। आज उनका पूरा परिवार मधुमक्खी पालन गतिविधि से जुड़ा हुआ है। उनके परिवार का जीवन यापन मधुमक्खी पालन से हो रहा है। डोली कुमारी के ससुर स्वर्गीय बटेश्वर मंडल ने वर्ष 1978 में मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया था। दरअसल एक मधुमक्खी पालक का दुर्घटना में पैर टूट गया,जिसके कारण वह चलने में असमर्थ था। उनके पास कुछ मधुमक्खी बॉक्स भी था। डोली कुमारी के ससुर ने अंजान होते हुए भी उस मधुमक्खी पालक की सहायता की। मधुमक्खी पालक ने उनके ससुर से कहा कि ''आपने अंजान होकर मेरी मदद की, मेरे पैर के टूट जाने के कारण मैं अपने मधुमक्खी बक्सों का देखभाल करने में सक्षम नहीं हूँ। देखभाल के अभाव में मेरी मधुमक्खियाँ मर जाएँगी, इसलिए यह काम भी आप ही को करना है। इस प्रकार मेरे ससुर मधुमक्खी पालन कार्य से जुड़ गए। बाद में धीरे–धीरे मधुमक्खी पालन में उनकी रूचि बढ़ती गई और वे इसी पेशे में लग गए।

वर्ष 1987 तक उनके पास मधुमक्खी के लगभग 150 बॉक्स हो गया था और अन्य व्यवसायों की तुलना में अच्छी खासी आमदनी होने लगी थी। उस समय उनके ससुर पूर्णियाँ में इकलौते मधुमक्खी पालक हुआ करते थे। परंतु अचानक 1987 में बाढ़ आने के कारण रातों–रात मधुमक्खियाँ पानी में बह गईं। किसी प्रकार 50 बक्सों को उनके परिवार के सदस्यों ने मिलकर पेड़ से टाँगकर बचाया था। 1990 तक फिर 100 बॉक्स हो गया। परंतु मधुमक्खी में सेंकब्रुड नामक बीमारी फैल गई। इस महामारी से सभी मधुमक्खियाँ समाप्त हो गई। उनके ससुर 1992 में रोजी –रोटी के तलाश में पंजाब चले गये। पंजाब में उन्होंने इटालियन मधुमक्खी को देखा। इस मधुमक्खी में बीमारियों की संभावना बहुत कम होती है। इसे देखते हुए उन्होंने वर्ष 1995 में पटना से इटालियन मधुमक्खी खरीदकर फिर मधुमक्खी पालन व्यवसाय में लग गए। डोली कुमारी के पति जयमंगल कुमार एवं उनके देवर राजमंगल कुमार ने इस काम को 1995 से

शुरू किया। डोली कुमारी भी वर्ष 2006 से मधुमक्खी पालन में अपना हाथ बंटा रही है। वर्ष 2007 तक 150 पेटिका उनके पास आ गई थी और अच्छी खासी कमाई होने लगी। एक बार फिर वर्ष 2008 में उनकी मधुमक्खियाँ भौरामाइट बीमारी के चपेट में आ गई। जब तक वे लोग इस बीमारी के बारे में कुछ इलाज ढूँढ़ते तब तक उनकी 140 पेटी मधुमक्खी समाप्त हो चुकी थी। डोली कुमारी का परिवार फिर भी हार नहीं माना तथा दोबारा कर्ज लेकर 50 पेटी मधुमक्खी खरीदकर पुन : इस कार्य को आरंभ कर दिया। डोली कुमारी वर्ष 2013 में राधा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। वह राधा जीविका स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष हैं तथा दीपक जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य है। आवश्यता पड़ने पर मधुमक्खी पालन हेतु कई बार उन्होंने अपने समूह से ऋण लिया एवं ब्याज सहित उसे किस्तों में वापस कर दिया। आज डोली कुमारी के पास 250 मधुमक्खी बॉक्स है। एक बक्से से प्रतिवर्ष 30–35 किलोग्राम शहद का उत्पादन होता है। एक बॉक्स के रख–रखाव में सालाना 2,000 से 2,500 रुपये के बीच खर्च आता है, जिनमें मधुमक्खी का पोषण दवाइयाँ एवं स्थानांतरण प्रमुख है। इस प्रकार उन्हें प्रति बॉक्स सालाना लगभग 1,000 का मुनाफा हो जाता है। उनके परिवार से जुड़कर गाँव के अनेक युवाओं ने मधुमक्खी पालन को अपना रोजगार बनाया। आज टीकापट्टी गाँव में 25 से अधिक परिवार मधुमक्खी पालन से जुड़े हैं तथा कई परिवार इसे करने के इच्छुक हैं।

डोली कुमारी कहती हैं कि– ''अगर हमारे पास पूँजी की व्यवस्था हो जाए जैसे शहद प्रोसेसिंग प्लांट, बॉटलिंग मशीन, अपना ब्रांड नाम, एफएसएसएआई लाइसेंस तथा सही मार्गदर्शन हो तो हम लघु कुटीर उद्योग चलाकर दोगुना लाभ कमा सकते हैं। क्योंकि हमारे द्वारा उत्पादित शहद को उपयुक्त संसाधन न होने के कारण बड़े व्यापारियों को बेचना पड़ता है जिससे हमें शहद का उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता है। अगर हमारे पास सभी प्रकार के संसाधन उपलब्ध हो तो हम मधुमक्खियों से केवल शहद ही नहीं बल्कि अन्य बहुमूल्य उत्पाद जैसे–राज अवलेह (रॉयल जेली), मधुमेह परागकण, प्रोपोलिश, मौन विल का संग्रह कर सकते है, जो कि अभी नहीं हो पा रहा है। मैं राधा जीविका स्वयं सहायता समूह से वर्ष 2013 से जुड़ी हूँ। इस दौरान हमें जीविका समूह द्वारा ऋण के रूप में मधुमक्खी पालन व्यवयाय में बहुत मदद मिली है।''

केस–2 **समूह से सशक्तीकरण**

रिंकी को स्वरोजगार से मिली राष्ट्रीय पहचान

रिंकी केसरी जागृति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी एक होनहार और लगनशील जीविका दीदी है। जीविका परियोजना के सहयोग से उन्हें एक राष्ट्रीय पहचान मिली है। अरवल जिले के प्रखंड कुर्था के मानिकपुर पंचायत की रहने वाली रिंकी केसरी की शिक्षा 8वीं कक्षा तक हुई है। जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ने से पहले रिंकी केसरी के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। परिवार में कमाने वाले सिर्फ पति थे, जो हर जगह मेला में घूम –घूम कर खिलौना बेचते थे। जिससे किसी तरह परिवार का पालन–पोषण हो रहा था। रिंकी केसरी के पास रहने के लिए घर तक नहीं था। एक कमरे में पूरा परिवार रहता था। साल 2015 में वह जागृति जीविका समूह से जुड़ी और समूह की सप्ताहिक बैठक में भाग लेने लगी। समूह की निरंतर बैठक में भाग लेने से उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी मिली। इसी बीच रिंकी केसरी और उनके पति को मुंबई जाने का मौका मिला। वहां जाकर उन्होंने वहां पर लगे मेले का भ्रमण किया और देखा कि लकड़ी की चाभी रिंग, नेम प्लेट इत्यादि कलाकृतियों की बिक्री हो रही है। जब वह वापस बिहार लौटी तब उन्होंने भी इस रोजगार को करने का मन बना लिया। रिंकी केसरी लकड़ी की चाभी रिंग ,नेम प्लेट, इत्यादी कलाकृतियाँ बना कर उसे नजदीकी बाजार और मेले में बेचने लगी। कच्चा माल खरीदने के लिए उन्होंने जीविका समूह से 20,000 रूपये का ऋण भी लिया। मेले में ये सारे लकड़ी की कलाकृतियाँ बिकने लगी और मुनाफा भी होने लगा। धीरे – धीरे रिंकी केसरी की लकड़ी की कलाकृतियाँ प्रसिद्ध होने लगी। जीविका परियोजना के द्वारा और उसके सहयोग से लगने वाले बड़े स्तर पर मेले में भी उन्हें जगह मिलने लगी। रिंकी केसरी कहती हैं कि जीविका परियोजना की मदद से उन्हें राज्य के बाहर बड़े स्तर पर आयोजित होने वाले मेले में भी अपनी लकड़ी की कलाकृतियाँ बेचने का मौका मिला है, जिसमे लाखों रूपये की कमाई हैं। वह अभी तक बिशाखापटनम, विजयवाडा, सोनपुर, मुंबई, शिलौंग, कोलकाता, झांसी, अहमदाबाद, पटना जैसे शहरों के आयोजित मेले में भाग लेकर लकड़ी की कलाकृतियाँ बेच चुकीं हैं और अच्छा मुनाफा कमाई हैं। रिंकी केसरी कहती हैं कि हर मेले में उन्हें 50 से 60 हजार रूपये की आमदनी हो जाती है। उन्होंने लकड़ी कि कलाकृतियाँ बनाने के लिए मशीन भी खरीद लिए है। वे आज अपना घर भी बना ली हैं और खुशहाल जीवन जी रहीं हैं। रिंकी केसरी के पति पुनीत केसरी इस कार्य में उनका सहयोग करते हैं। वे आज खुश हैं और जीविका परियोजना को धन्यवाद देते हुए कहती हैं कि आज उन्हें जीविका परियोजना की मदद से एक अलग पहचान मिली है।

बड़की दीदी
बड़की दीदी अपने काम से लौट रही थीं कि उनकी नज़र पास ही चल रही स्वयं सहायता समूह की बैठक पर पड़ी।
दीदी, आप सब आज किस मुद्दे पर चर्चा कर रही हैं?
दीदी, बैंक से मिले ऋण को उपयोगी बनाने पर चर्चा कर रहे हैं।
बैठक SHG
आपलोग किस काम के लिए ऋण ले रही हैं?
मैं घर की मरम्मत के लिए ऋण ले रही हूँ।
मैं अपनी दवाई के लिए।
मैं बेटी की शादी के लिए लूँगी।
अरे, ये सारी आवश्यकताएँ तो स्वाभाविक हैं, लेकिन आपको तो ऋण वापस भी करना है।
हाँ दीदी, ये तो है, हम सब खेती में काम करते हैं, मजदूरी करके जितना पैसा कमाएँगे उसी से ऋण चुकाएँगे न।
लेकिन दीदी, ऋण की राशि सिर्फ घर की जरूरतों को पूरा करने में इस्तेमाल कर रही हैं। इससे आपको ऋण वापसी में कठिनाई का सामना तो करना पड़ेगा ही न।
तो फिर हमें क्या करना चाहिए दीदी?
आप सबको खेती के साथ स्वरोजगार की ओर कदम बढ़ाने होंगे, ताकि घरेलू खर्चों के लिए बार-बार ऋण न लेना पड़े। साथ ही खर्च का आर्थिक दबाव न पड़े।
लेकिन दीदी, स्वरोजगार करने के लिए क्या-क्या करना होगा? इसकी जानकारी हमें नहीं है।

✍ **संतोष कुमार**
प्रबंधक संचार, नालंदा

मन की कलम से

रचना आमंत्रण

जीविका द्वारा **''चेंज मेकर्स''** (द्विभाषीय – त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका सम्पादित गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों /सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को **''चेंज मेकर्स''** में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं –

changemakers.brlp@gmail.com

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

– संपादकीय टीम, चेंज मेकर्स

विकास के हम खेवैया

मेहरबान हैं मेरी हाथें
हुनर के हम समुन्दर
अनंत हैं सीमाएं हमारी
स्वाबलंबन के हम कलन्दर।

सीखने की हम में कला है
नवाचार से आंगन का गुलशन खिला है
अपनी ज़िन्दगी के हम खुद रचियेता
हममें न कोई छोटा न कोई बड़ा है।

विकास के हम खेवैया
समृद्धि है हमारी नैया
खुद खींचते अपने तकदीर की लकीरे
मिलकर हम दीदी भैया।

सपनों की सेज पे हम
हकीकत की फूल सजाते
मेहनत की धुन पे
सम्रद्धि संगीत हम गुनगुनाते।

विघ्न के ललाट पे
हम अपनी जीत लिख जाते
रोज एक नई सिख से
हम अपनी जिन्दगी सजाते।

Anand Shankar
SPM-HRD

Video Dissemination
Through Pico-Projector
by The Community Cadre

Visit of BMGF officials
from Seattle/ US
along with PCI and Accenture officials
at Nalnda

JEEViKA
SHG Members are participating in
Food and Dietary Diversity Campaign
(FDDC)

Members from JEEViKA SHG
Practicing Yoga
During Yoga Week

बिहार सरकार

JEEViKA

Rural Development Department,Govt. of Bihar
Vidyut Bhawan - II,1st & 3rd Floor, Bailey Road, Patna- 800 021;
PhoneNo / Fax: +91 - 612-2504980 / 60,
Website : www.brlps.in :: E-mail : info@brlps.in